International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-11-2021, Accepted: 28-11-2021, Published: 15-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 74-76

महर्षि वाल्मीकि के दस्यु प्रकरणः एक विवेचन

डॉ. आर्यकुमार हर्षवर्धन
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, ख्रीष्ट महाविद्यालय, कटक, ओड़िशा, भारत

सारांश
रामायण महाकाव्य के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि के जीवन–चरित को वर्णन करते हुए कई लेखक बताते हैं कि रामायण लिखने से पहले वे एक दस्यु थे। लोक प्रचलित कथानक को ही आधार मानकर कहानी गढ़ी गई है न कि तथ्यात्मक संदर्भ के बल पर। क्योंकि रामायण महाकाव्य में स्वयं वाल्मीकि अपनी स्वीकारोक्ति में बताते हैं कि वे प्रचेता ऋषि के सुपुत्र हैं। अगर वे पहले दस्यु थे और मुनियों के उपदेश से राम–नाम जाप करते हुए अलौकिक काव्य प्रतिभा प्राप्त की तो रामायण में उसे जरूर उल्लेख करते। परंतु 'रामायण ' और परवर्ती 'महाभारत' में भी इस कथा की लेशमात्र सूचना नहीं है। इस संबंध में तथ्यात्मक और तर्कसंगत विश्लेषण इस आलेख का मुख्य प्रतिपाद्य है।

मूलशब्दः आद्य प्रणेता, अनुशासन पर्व, ब्रह्माङ्ग स्थिति, सप्तऋषि, दस्यु रत्नाकर, चेतना का उद्‌भास

प्रस्तावना

रामायण के आद्य प्रणेता महर्षि वाल्मीकि पहले एक दस्यु थे – यह निभ्रान्त मिथ्यापवाद है। क्योंकि मूल वाल्मीकि रामायण में इस कथा पट का कोई भी प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। रामायणोपरांत अनेकादि ग्रंथों में इस प्रकरण का उल्लेख मिलता है। महाभारत के अनुशासन पर्व में सर्वप्रथम इस कथा का आभास मिलता है कि किसी विवाद के कारण मुनियों ने वाल्मिकी को ब्रह्माङ्ग कहा और वे तब से पापी हो गए। वाल्मीकि ने शिव की शरण ली और उन्होंने पाप मुक्त करते हुए कहा रू "तेरा यश श्रेष्ठ होगा" (अध्याय 18) इस कथा के आधार पर वाल्मीकि के 'ब्रह्माङ्ग स्थिति' को दस्यु रूप दे दिया गया है। यह अनुमान योग्य है। किंतु वाल्मीकि को स्पष्टतः कवि के रूप में महाभारत के द्रोण पर्व (118,48) और शांति पर्व (200, 4) में स्वीकार किया गया है। एतद् भिन्न शांति पर्व (57, 40) में किसी भार्गव कवि का नामोल्लेख भी मिलता है लेकिन महाभारतोपरांत 'स्कंद पुराण' में महर्षि वाल्मीकि पहले दस्यु होने की कथा का विकसित रूप प्राप्त होता है। 'स्कंद पुराण' के चार खंड – वैष्णव (अध्याय : 21), अवंती (अध्याय : 24), नागर (अध्याय : 124) और प्रभास (अध्याय : 298) में यह वर्णन मिलता है कि वाल्मीकि पहले परिवार प्रतिपोषण हेतु दस्युगिरी करते थे। उनका मूल नाम वैष्णव खंड में नहीं है। अवंती खंड में अग्नि शर्मा, नगर खंड में लोह संघ और प्रभास खंड में वैशाख का उल्लेख है। उसके बाद की कहानी प्रायतः समान है कि एक दिन सभी सप्तऋषियों को दस्यु मार डालना चाहता था किंतु ऋषियों ने शांत भाव से उनसे यह पूछा : "क्या तुम जिस परिवार के लिए पापाचार में लिप्त हो उस पाप–फल के भागीदार वो होंगे? पूछ कर आओ तो?" परिवार वालों के इनकार करने पर ऋषियों के पास लौट कर अपने किए पाप कर्मों पर वह पश्चाताप करता है। फिर ऋषियों के परामर्शानुसार वह ध्यान तथा मंत्र जप करने में तल्लीन हो जाता है। बहुत वर्षों के बाद सप्त ऋषि जब उस रास्ते से लौटते हैं तो देखते हैं कि वाल्मिक से समावृत वह दस्यु ध्यानस्थ होकर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। उसका नाम वाल्मीकि रखकर सप्तऋषियों ने उसको रामायण लिखने का परामर्श दिया। प्रस्तुत कथा का वर्तमान प्रचलित रूप हमें 'अध्यात्म रामायण' के अयोध्या कांड (सर्ग 6, श्लोक 42 – 88) में प्राप्त होता है। अयोध्या से निर्वासित होकर राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट में अपना निवास स्थान निश्चित करने के लिए वहां स्थित महर्षि वाल्मीकि के पास परामर्श मांगने के लिए पहुंचे। वाल्मीकि राम को देखते ही गदगद हो उठे। विनम्र–स्तुति प्रार्थना की और राम नाम की महिमा दर्शाते हुए इस प्रकार निजी कथा सुनाई –

'जन्मतः वे ब्राह्मण थे। लेकिन किरातों के साथ रहने के कारण वे शूद्र आचरण करने लगे। एक शूद्रा से शादी हो जाने के बाद अनेक संतति के जनक भी बन गए। इतने विराट परिवार के भरण–पोषण हेतु कुसंग से वे सदा हाथ में धनुष बाण धारण करते हुए चोरी भी करने लगे। एक दिन सात मुनिजन उस रास्ते से होकर कहीं जा रहे थे तो वस्त्रादि छीनने के लिए मैंने घोर जंगल में उन्हें रोकते हुए कहा : "सब कुछ मेरे हवाले कर दो, वरना मैं तुम्हें मार डालूंगा।" उत्तर में उन्होंने कहा कि "जिन परिवार जनों के लिए तुम प्रत्यह पाप कमा रहे हो उस अधर्म के भागीदार क्या वह लोग होंगे, पूछ कर आओ।" जब परिवार वालों ने स्पष्टतः कहाः "यह पाप तो तुम ही को लगेगा, हम केवल धन के ही भोगने वाले हैं," तो उन्हें वैराग्य आ गया और मुनियों की शरण ले ली।

उन्होंने चिंतन मनन के बाद परामर्श दिया कि तुम इतने पापाचारी हो कि राम जैसा पवित्र नाम भी ठीक से बोलने में असमर्थ हो। इसलिए तुम एकाग्रचित्त होकर निरंतर "मरा–मरा" का जप करते रहो। बहुत दिन हुए एक स्थान पर ध्यान करने के कारण उनके ऊपर वाल्मिक ने घर बना डाला। एक सहस्त्र युग बीतने पर ऋषि उस मार्ग से लौटे और कहा : "हे मुनिवर, आज से तुम वाल्मिक बने। वाल्मिक से निकलने के कारण यह तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ।"

इस कथा की पुष्टि तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में भी की गई है–

जान आदि कवि नाम प्रतापू
भयह सुद्ध करि उलटा जापू।।
(बाल कांड,दोहा 19ः 5)

उलटा नामु जपत जगु जाना।
वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।।
(अयोध्या कांड, दोहा 194ः 8)

'अध्यात्म रामायण' में वर्णित महर्षि वाल्मीकि का पहले दस्यु होना और फिर तपस्वी बनने की कथाओं का विस्तार हम अनेकानेक अर्वाचिन ग्रंथों और पुराणों में पाते हैं। तत्व संग्रह रामायण (अयोध्या कांड, अध्याय 22– 23), आनंद रामायण (राज्य कांड, अध्याय 14), कृतिवासीय रामायण, तोरवे रामायण आदि में राम नाम के महात्म्य पर विशेष बल देते हुए दस्यु प्रसंग की व्याख्या की गई है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि मूल वाल्मीकि रामायण में दस्यु रत्नाकर बाद में मरा–मरा जपते हुए महर्षि बनना और रामायण जैसे अमर ग्रंथ लिखने के तथ्य का लेश मात्र भी संकेत नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में वाल्मीकि दो जगहों पर अपना जन्म परिचय देते हैं। उत्तर कांड के वर्णनानुसार अयोध्या लौटने पर राम अश्वमेध यज्ञानुष्ठान करते हैं, जिसमें महर्षि वाल्मीकि भी लव–कुश और सीता सहित पधारते हैं।(वा.रा. 7::93:1) महर्षि वाल्मीकि के साथ यज्ञशाला में सीता भी उपस्थित होती हैं। राम को जब पता चलता है तो उन्होंने विचार कर कहा "यदि सीता का चरित्र शुद्ध है और यदि उनमें किसी तरह का पाप नहीं है तो वे महामुनि की अनुमति लें, यहां आकर जन समुदाय में अपनी शुद्धता प्रमाणित करें।" (वा.रा. 7:95:4) महात्मा वाल्मीकि जी राम का हार्दिक अभिप्राय समझकर बोले "ऐसा ही होगा।"

दूसरे दिन नाना देशों से पधारे हुए ज्ञाननिष्ठ, कर्मनिष्ठ और योगनिष्ठ लोग सभा में विराजमान थे। वहां महर्षि वाल्मीकि सीता की शुद्धता का समर्थन करते हुए बोले : "हे रघुनंदन ! मैं प्रचेता का दसवां पुत्र हूं। मेरे मुंह से कभी झूठ बात निकली हो इसकी मुझे याद नहीं है। मैं सत्य कहता हूं यह दोनों (कुश और लव) आपके ही पुत्र हैं।" (वा.रा. 7:96:19)

अपना परिचय प्रदान करते हुए महर्षि फिर बोले : "मैंने कई हजार वर्षों तक भारी तपस्या की है। यदि मिथिलेश कुमारी सीता में कोई दोष हो तो मुझे उस तपस्या का फल ना मिले। मैंने मन, वाणी और क्रिया द्वारा भी पहले कभी कोई पाप नहीं किया है। यदि मिथलेश कुमारी सीता निष्पाप हों, तभी मुझे अपने उस पापशून्य पुण्यकर्म का फल प्राप्त हो। रघुनंदन ! मैंने अपने पांचों इंद्रियों और मन– बुद्धि द्वारा सीता की शुद्धता का भलीभांति निश्चय करके ही इसे अपने संरक्षण में लिया था। यह मुझे जंगल में एक झरने के पास मिली थी।" (वा.रा. 7:96:20–22)

उत्तरकांड में ही एक और जगह महर्षि वाल्मीकि प्रचेता के पुत्र हैं, इस कथा का उल्लेख मिलता है। (वा.रा. 7:93:17)

यहां स्मरण योग्य है कि प्रचेता ब्रह्मा का पुत्र है और मनुस्मृति में वर्णन मिलता है कि:

अहं प्रजाः सिसृक्षुस्तु तपस्तप्त्वा सुदुश्चरम। पतीन्प्रजानामसृजं महर्षीनादितो दश।। मरीचिमत्र्यंगिरसी पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम प्रचेतसं वसिष्ठं च भृगुं नारदमेव च।।
(मनुस्मृति 1.24.35)

अथार्त मैंने (ब्रह्मा ने) प्रजा सृजन की इच्छा से घोर तप द्वारा प्रारंभ में प्रजाओं के पति 10 महर्षियों को उत्पन्न किया। वे महर्षि मरिचि, अत्रि,अंगिरा, पुलस्त्य,पुलह, क्रतु, प्रचेता, वसिष्ठ, भृगु और नारद हैं।

जैसा कि वाल्मीकि रामायण में महर्षि वाल्मीकि स्वयं कहते हैं कि वे प्रचेता के दसवें पुत्र हैं। इससे यह स्वतः प्रमाणित हो जाता है। क्योंकि किसी भी कवि का संपूर्ण परिचय या तो उसके स्वतः के साहित्य में अथवा उस पर रचित साहित्य में ही प्राप्त हो सकता है और जहां तक वाल्मीकि के दस्यु होने की कहानी है, यह बालकांड के प्रसंगों से ही निराधार हो जाता है जहां महर्षि विश्व का सर्वप्रथम श्लोक उच्चारण करते हैं। बालकांड के अनुसार वाल्मिकी तमसा नदी के किनारे एक आश्रम में रहते थे। उनके मन में एक आदर्श मानव के चरित्र को लिपिबद्ध करने की इच्छा जागृत हुई। नारद के परामर्शानुसार उन्होंने अयोध्या के तत्कालीन शासक महाराजा राम को अपना चरित नायक बनाने का संकल्प किया। इसी समय एक अभावित घटना घटी।

मुनि वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर भ्रमण करते हुए देखते हैं कि पास ही एक क्रौंच पक्षी युगल मन के सुख से कूजन करते हुए विचर रहे थे। ऐसे समय पर एक निषाद ने आकर पक्षी का वध कर दिया, पक्षी रक्ताक्त देह से मिट्टी पर झटपटाने लगा, उस पक्षी की दूरावस्था देखकर दूसरा पक्षी सहचर के विच्छेद से करूण स्वर में रुदन करने लगा। इस आकस्मिक दृश्य का अवलोकन करते ही धर्मात्मा वाल्मीकि के हृदय में करूणा का संचार हुआ, तत्क्षणात् उन्होंने अधर्म–कर्म युक्त निषाद को कहाः–

मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमःशाशवती समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीःकाममोहितम्।।

अर्थात, "रे निषाद, तू कभी भी प्रतिष्ठा को ना पा सकेगा क्योंकि तूने काम मोहित क्रौंच द्वय में से एक का वध किया है।" इस प्रकार पक्षी के शोक में करूणाद्र हृदय वाल्मीकि के कंठ से श्लोक छंद का आविर्भाव हुआ एवं ब्रह्मा के निर्देश क्रम पर उन्होंने शोक पीड़ित हृदय से उपर्युक्त श्लोक के छंद में ही रामायण काव्य की रचना की।

यहां द्रष्टव्य है कि एक दस्यु, जो बात बात पर मारने की बात करता हो, क्या वो एक सामान्य पक्षी के विच्छेद से करूणाद्र तथा विचलित होकर श्राप तक दे सकता है?

समग्र रामायण में जिस विद्वता तथा चेतना का उद्भास हुआ है वह जन्मों के संस्कारगत भावभूमि पर ही खड़ा हो सकता है,किसी दस्यु–चिंता से उद्भूत प्रक्रिया से नहीं।

समग्र स्वतः और परतः प्रमाण के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि रामायण व्यतिरेक परवर्ती शास्त्रों, पुराणों में जिस महर्षि वाल्मीकि की चर्चा है वह आदि कवि वाल्मीकि से भिन्न नहीं हैं। यह सर्वसामान्य है कि वाल्मीकि रामायण की घटनाओं के समकालीन थे जैसा कि रामायण में वर्णन है कि वाल्मीकि दशरथ के सखा थे, उनके आश्रम में सीता के पुत्र उत्पन्न हुए और उनके शिष्य बन गए तथा राम के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर वाल्मीकि ने सीता के सतीत्व का साक्ष्य साक्षी दिया।

हो सकता है कि परवर्ती काल में वाल्मिकी नाम की व्युत्पति करते हुए यह प्रसिद्ध हो गया होगा कि तपस्या करते समय उनका समग्र शरीर 'वाल्मिक' से समावृत हो गया।

यह भी हो सकता है कि 'ब्रह्माह्व' शाप को दस्यु रूप में रूपांतरित कर दिया गया हो और राम नाम के महात्म्य तथा व्याप्ति हेतु राम नाम गुणगान से एक दस्यु भी महर्षि वाल्मीकि बन सकता है यह दर्शाया गया हो। क्योंकि ऐसे देखा जाए तो दस्यु– कथनादि में राम नाम का जप करने आदि का उल्लेख नहीं है। सच तो यह है कि महर्षि वाल्मीकि प्रथम राम कथाकार एवं प्रथम महाकाव्यकार थे। उनका जीवन–आदर्श एक प्रतिष्ठित ऋषि तथा अध्यात्म पुरुष जैसा था। उनके पवित्र व्यक्तित्व के पूर्व दस्यु प्रकरण को जोड़ने की प्रक्रिया जितनी अर्वाचिन है उतनी अनुचित भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, हंसराज, संस्कृत साहित्य का इतिहास दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास, 1983.
2. अग्रवाल, रामेश्वर दयालु, कम्बरामायण और रामचरितमानस, मेरठः कल्पना प्रकाशन, 1973.
3. अज्ञेय, कवि दृष्टि, इलाहाबादः लोकभारती प्रकाशन, 1983,
4. अध्यात्म रामायण, गोरखपुरः गीता प्रेस, 1968.
5. गुप्त, माता प्रसाद, तुलसी दास, प्रयागः हिन्दी परिषद, 1953.

6. गुप्त, सुरेशचन्द्र, तुलसी का काव्यादर्श, दिल्लीः साहित्य सहकार, 1976.
7. गुप्त, शांतिस्वरूप तथा श्रीनिवास मिश्र, वाल्मीकि रामायण में राज्य, समाज एवं अर्थव्यवस्था. अलीगढ़ः भारत प्रकाशन मंदिर, 1976.
8. गुप्ता, शबनम. वाल्मीकि रामायण का समाजशास्त्रीय अध्ययन. नई दिल्लीः क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, 1998.
9. चौबे, व्रजबिहारी, महर्षि वाल्मीकि,पंजाबः विश्व हिंदू परिषद, 1982.
10. तुलसीदास, गोस्वामी, श्रीरामचरितमानस. गोरखपुरः गीताप्रेस, 1979.
11. त्रिपाठी, राधावल्लभ, आदिकवि वाल्मीकि, सागरः संस्कृत परिषद, 1981.
12. दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्स, 1956.
13. दीक्षित, राजपति तुलसीदास और उनका युग. वनारस ज्ञान मंडल, 1952 साहित्य मण्डल, 1987.
14. प्रसाद, अग्रवाल, महावीर, वाल्मीकि रामायण में रस विमर्श, वाराणासीः भारतीय विद्या प्रकाशन, 1992.
15. रामायणकालीन संस्कृति, नई दिल्लीः सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, 1987.
16. वाल्मीकि, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (प्रथम व द्वितीय भाग), गोरखपुरः गीताप्रेस,1999.
17. वेबर, (अनु. कन्हैयालाल पोद्दार) संस्कृत साहित्य का इतिहास भाग 1, नवलगढ़ः श्रीराम विलास पोद्दार स्मारक ग्रंथमाला समिति, 1938.
18. भक्ति का विकास, वाराणसीः चौखम्बा विद्याभवन, 1998,
19. शर्मा, जगदीश, बाल्मीकि रामायण और रामचरितमानसः सौन्दर्य विधान का तुलनात्मक अध्ययन, गुलाबपुराः भारतीय शोध संस्थान, 1969.
20. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, गोस्वामी तुलसीदास वाराणसीः नागरी प्रचारिणी सभा, 1996.
21. शुक्ल, पण्डित ब्रह्मानन्द (सं) उत्तररामचरितः भवभूति, मेरठः साहित्य भंडार, 1975.
22. शुक्ला, श्रद्धा,वाल्मीकि रामायण तथा उत्तर रामचरित का तुलनात्मक विवेचन, दिल्लीः नाग प्रकाशक, 1995.
23. शंकरानन्द, स्वामी, मानस के प्रतीक, कानपुरः सेंट्राल चिन्मय मिशन ट्रष्ट, 1994.
24. सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द,रामायण–भ्रन्तियां और समाधान, दिल्लीः आर्य प्रकाशन मंडल, 2002
25. हरि, वियोग, हमारी परम्परा, नई दिल्लीः सस्ता साहित्य मण्डल, 1967.
26. हरिश्चन्द्र, विश्वज्योति, रामायणांक (अप्रैल–मई, 1971)